युगप्रधान दादाश्री
कल्याणसागरसूरीश्वरजी

—श्री भूरचन्द जैन

भारत की प्राचीन संस्कृति में जैन धर्मका विशेष योगदान रहा है। धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक गतिविधियों में जैन धर्मावलम्बियों की महत्वपूर्ण भूमिका सदियों से रही है। वहां इस धर्म के प्रचारकों एवं अनुयायियों की ओर से साहित्य सर्जन की विशेष देन भी रही है। इतिहास, पुरातत्त्व एवं वस्तुकला में जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थ एवं मन्दिर आज भी प्राचीन भारतकी गौरवशाली तस्वीर लिये हुए हैं। इस धर्म के अंचलगच्छ के संत महात्माओं, आचार्यों का साहित्य, इतिहास पुरातत्त्व के साथ-साथ सत्य एवं अहिंसा का धर्म प्रचार करने की अमूल्य देन रही है। इसी संदर्भ में युगप्रधान दादा कल्याणसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब की स्मृति होना स्वाभाविक ही है, जिनकी जैन धर्मके व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु, वास्तुकला के कलात्मक नवनिर्माण करवाने, धर्म प्रचारकों को तैयार करने, ज्ञान भंडारोंकी स्थापना, चतुर्विध संघ की तीर्थ-यात्राओं का आयोजन, जैन एकता, महाव्रत अणुव्रतों का प्रचार करने में अनूठी देन विश्व के रंगमंच पर रही है। आज इन महान् त्यागी और तपस्वी की स्मृतियां देश के अनेकों जैन मन्दिरों में प्रतिभाओं, चरण पादुकाओं के रूपमें विद्यमान है वहां अनेकों ज्ञान भंडारों में आप द्वारा लिखित ग्रन्थ आपकी ओजस्वी ज्ञान-गरिमाके परिचायक बने हुए हैं।

भारतके ऐसे महान् रत्न का जन्म गुजरात के लोलाडा गांवमें श्रीमालजाति के कोठारी वंशके श्री नानिग के यहां श्रीमती नामिलदे की कोख से वि. सं. १६३३ आषाढ़ सुद दूज (वैशाख सुद छट्ठ) गुरुवार को हुआ। प्रभात की अनोखी वेला, आर्द्रा नक्षत्र में माताने पुत्रको जन्म दिया उस समय सम्पूर्ण परिवारमें विशेष खुशी की लहर दौड़ पड़ी। सम्पूर्ण गांव में विशेष आनन्द का अनुभव जनमानस को होने लगा। प्राकृतिक सौन्दर्य भी सुहावना बन गया। पशु पक्षियों में भी विशेषतौर से खुशी की उछलकूद होने लगी। जब माताश्री नामिलदे ने गर्भ धारण किया उस समय उन्हें प्रभात की सुहावनी वेलामें उगता हुआ सूर्य का दिव्य स्वप्न दिखाई दिया, जो अज्ञान, अत्याचार, अनाचार के अन्धकार को मिटाने का प्रतीक था।

श्रीनानिग के यहां बालक का जन्म हुआ, उससे पहले इनके सात वर्षीय सोमादे पुत्री भी थी। माता पिताके असीम लाड प्यार में पलने वाले बालक का नाम कोडनकुमार रखा गया। गोरा बदन, चमकती आंखे, घुंघराले बाल व सांचे में ढले अंग ऐसे लगरहे थे मानों विधाताने इतमिनान से इस महान् देह की रचना की हो। बालक के गौर बदन, हृष्टपुष्ट शरीर, खिलता मुखड़ा, चंचलता को देखकर सभी इनकी ओर स्वतः ही आकर्षित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो जाते थे। जो कोई भी बालक को देखता उसका मुफाया हुआ चेहरा भी दो क्षणों के लिये खिल उठता। यह इस बालक का अनोखा आकर्षण था। पारिवारिक सुख सुविधा में बालक का शारीरिक विकास होने लगा।

जब बालक पांच वर्षका हुआ तो बाल अठखेलियों में अत्यन्त ही व्यस्त रहने लगा। बचपनमें सहनशीलता, मधुरता, धैर्यता, गम्भीरता, इनके शान्त स्वभाव के अंग बने हुये थे। एकदिन वह अपनी माताश्री नामिलदे के साथ जैन उपाश्रय में आचार्य धर्ममूर्तिसूरिजी के दर्शनार्थ गया। जहां वह अत्यन्त ही शान्त एवं गम्भीर होकर पूज्य आचार्यश्रीजी के वेष एवं उनकी मुखाकृति को निहारने लगा। बालक कोडनकुमार अपनी मांकी उंगली को छोड़ता हुआ आचार्यश्री के निकट पहुंच गया और बिना किसी हिचक के आचार्यश्रीजी की गोदमें जा बैठा। बालक के इस व्यवहार को देखकर उपस्थित अनेकों श्रावक एवं श्राविकाएं अवश्यही नाराज हुए लेकिन आचार्यश्रीजी ने बड़ेही लाड प्यारसे बालक के इस स्वभाव को सहन किया। इसी बीच बालक कोडनकुमार आचार्यश्रीजी के हाथ से मुहपत्ति को लेकर बार-बार अपने मुख की ओर करने लगा। जिसे देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये।

आचार्यश्री धर्ममूर्तिसूरिजी ने बालक के उज्जवल भविष्य को देखते हुए उनकी माता से संघ सेवा करने के लिये बालक की मांग की। माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने एवं पिता के परदेश यात्रा के कारण मां ने बालक को देने की अनच्छिा व्यक्त की। चार वर्ष पश्चात् जब आचार्य धर्ममूर्तिसूरिजी पुनः लोलाडा गांव में पधारे, उस समय नव वर्षीय बालक कोडनकुमार ने स्वेच्छा से दीक्षित होने की इच्छा व्यक्त की। मां-बाप ने भी स्वेच्छा से बालक को जैन साधुत्व स्वीकार करने की अनुमति दे दी। वि. सं. १६४२ वैशाख सुदी तृतीया को कोडनकुमार ने धवल्लकपुर में दीक्षा ग्रहण की। विराट् समारोह का आयोजन नागड गोत्रीय माणिक सेठ ने बड़े ही धूमधाम से किया। कोडनकुसार नव वर्ष की अवस्था में जैन साधु बन गये और इनका नाम 'शुभसागर' रखा गया।

बालक कोडनकुमार अब पंच महाव्रतधारी जैन साधु बन गये। जैन साधु श्री शुभसागर को दो वर्ष के पश्चात् भारतविख्यात जैन तीर्थ पालीताणा की पवित्र धरती पर वि. सं. १६४४ माह सुदी पंचमी को बड़ी दीक्षा दी गई और आपका नाम मुनि कल्याणसागर रखा गया। शुभ लक्षणों वाले शुभसागर मुनि जनजन का कल्याण करने वाले मुनि कल्याणसागरजी महाराज साहब के नाम से सर्व विख्यात होने लगे। आचार्य धर्ममूर्तिसूरिजी महाराज साहब के आज्ञापालक मुनि कल्याणसागरजी को वि. सं. १६४९ वैशाख सुदी तृतीया को अहमदाबाद में भव्य समारोह के बीच आचार्य पद की पदवी प्रदान की गई। अब मुनि कल्याणसागरजी महाराज का नामकरण आचार्य कल्याणसागरसूरीश्वरजी गखा गया।

ज्ञानपुंज, धर्मप्रचारक, विद्वान्, त्यागी एवं तपस्वी, चमत्कारी आचार्य कल्याणसागर सूरीश्वरजी महाराज के ओजस्वी चरित्र, संघ सेवा एवं एकता की अद्भुत शक्ति को देखकर आचार्य धर्ममूर्तिसूरि अत्यन्त ही प्रभावित हुए और इन्हें अलग से विहार कर जन-मानस को धर्म मार्ग बताने का आदेश दिया। आपने अपनी अमृतवाणी. सदुपदेशों, दैवी चमत्कारों से पथ भूलों को सच्चा मार्ग बताया जिसके प्रभाव से चतुर्विधि संघ आपसे अत्यन्त ही प्रभावित हुआ और आपको वि. सं. १६७२ में राजस्थान की ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण उदयपुर नगरी में युगप्रधान की उपाधि देकर अलंकृत किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युगप्रधान आचार्य श्री कल्याणसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब ने अपने चमत्कारों से जनमानस को अपनी ओर अत्यन्त ही आकर्षित किया। जब वि. सं. १६२५ में आगरा में कुरपाल सोनपाल द्वारा बनाये जैन मन्दिर को मुगल बादशाह जहांगीर ने तोड़ने का प्रयास किया तो आपने अपनी ओजस्वी चमत्कारी शक्ति से उसे बचाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वि. सं. १६९९ में जालोर में फैली महामारी से जनमानस को बचाया। चमत्कारों के साथ-साथ युगप्रधान आचार्य कल्याणसागर सूरीश्वरजी का जीवन विकास की ओर अधिक रहा। आपने अपने जीवनकाल में अनेकों शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। वि. सं. १७०६ में सूरत नगर में ज्ञान भंडार की स्थापना कर आपने अनेकों विद्याप्रेमियों, पुरातत्त्ववेत्ताओं, शोधशास्त्रियों को सहयोग प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में आप द्वारा दीक्षित अनेकों जैन साधु साध्वियों को प्रकाण्ड विद्वान् बनाने में आपकी रुचि अनूठी रही।

शिक्षा प्रचारक युगप्रधान दादा कल्याणसागर सूरीश्वरजी म. सा. द्वारा कई जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाते हुए उनकी प्रतिष्ठा भी करवाई। मन्दिरों के निर्माण के अतिरिक्त आपने धर्म प्रचार से अनेकों राजाओं से सार्वजनिक तौर पर होने वाली हत्याओं का बहिष्कार करवाया। अनेकों राजपुरुषों, धनाढ्य सेठ साहूकारों, प्रतिष्ठित नागरिकों, समाजसेवियों को जैन धर्म अंगीकार करवाने की आपकी देन सदैव चिरस्मरणीय रहेगी। आपकी निश्रामें गुजरात, राजस्थान, बिहार, सिन्ध आदि अनेकों प्रदेशों में स्थित विख्यात तीर्थों की यात्रा हेतु पैदल संघ निकालने का आपका अनुकरणीय प्रयास रहा।

सोलहवीं शताब्दि के युगपुरुष दादा कल्याणसागर सूरीश्वरजी म. सा. ने वि. सं. १६९१ में वर्धमान पदमसिंह श्रेष्ठि चरित्र को संस्कृत में लिख दिया। आपपर सरस्वती की विशेष अनुकम्पा रही। आपने अनेकों रचनाओं की रचना की जो आज भी जैन जगत् की अमूल्य निधि बनी हुई हैं। युगप्रधान दादाजी की आज्ञामें करीबन ११३ साधु एवं २२८ साध्वियाँ धर्म प्रचार कार्योंमें तल्लीन थे। वि. सं. १७१८ की वैशाख सुदी तृतीया को प्रभात वेलामें अपने युग का युगपुरुष अपनी पावन स्मृतियाँ छोड़ता हुआ इस संसार से विदा हो गया। लेकिन आज भी इनकी साहित्यक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्षेत्र को अमूल्य देन भारत की संस्कृति में आपना विशिष्ट स्थान लिये हुए है। आज भी आपकी स्मृति जन मानस के हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़े हुए अंकित है। आपके पावन स्मृति स्मारक स्वरूप अनेकों जिन मन्दिरों एवं धार्मिक स्थलों पर आपकी चरण पादुका एवं प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की हुई हैं, जिनके दर्शन मात्र से धार्मिक शिक्षा, सत्य का पथ, सेवा की कामना, एकता का प्रतिबोध, त्याग की भावना का आभास मिलता है।

❀ ❀ ❀

आत्मा स्वयं ही अपने सुख दुःख का कर्ता और विकर्ता है, सन्मार्गगामी आत्मा स्वयं का मित्र है और कुमार्गगामी आत्मा स्वयं का शत्रु।

आत्मा का तप और संयम से दमन करना चाहिये सचमुच आत्मा दुर्दम है। दमित आत्मा इहपरलोक में सुखी होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org